International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर्यावरण के घटक : एक विश्लेषण

डॉ प्रियंका प्रियदर्शिनी
शोध प्रज्ञ, विषय– संस्कृत
बी0आर0ए0बी0यू0,मुजफ्फरपुर, बिहार।

भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश प्रकृति के सूक्ष्म रूप हैं। प्रकृति का महद्रूप परब्रह्म है। प्रकृति ही आदिशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित संपूर्ण सृष्टि का आधार–स्तंभ है, इसे अनादिकाल से ही माता के रूप में मान्यता मिली हुई है। ब्रह्म सभी योनियों में बीज–स्वरूप पिता हैं। ब्रह्म और प्रकृति के इस अन्तःसंबंधन को 'तन्त्रमहाविद्या' में इस प्रकार निरूपित किया गया है–

जले शीतलत्वं शुचौ दाहकत्वं विधौ निर्मलत्वं रवौ तापकत्वं।
तवैवाम्बिके यस्य कस्यापि शक्तिस्त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

प्रकृति से परे कोई विद्या नहीं है–

न विद्या प्रकृतिं परा।

भारतीय मनीषियों ने भूमि को मातृ–तत्त्व के रूप में स्वीकार करते हुए स्वयं को इसका पुत्र माना है–

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।[1]

धार्मिक कृत्यों में भी हम सर्वप्रथम भूमि माता का पूजन कर उनके प्रति अगाध श्रद्धा अभिव्यक्त कर, उनसे अपने को धारण करने के लिए प्रार्थना करते हैं –

पृथिवि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि। पवित्रं कुरू चासनम्।।

'रामायण' के नायक भगवान् श्रीराम का भी अपनी मातृभूमि के प्रति अप्रतिम अनुराग तो जगत् प्रसिद्ध ही है। संस्कृत कवि की वाणी में प्रस्तुत है, लक्ष्मण के प्रति राम की उक्ति–

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

जल हमारा प्राण–तत्त्व है। सुबह में बिस्तर छोड़ने के पश्चात् से ही हमें जल की आवश्यकता महसूस होने लगती है। ऋषियों ने जल को देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। गंगा आदि नदियों को देवी की श्रेणी में रखकर उन्हें पवित्र और पापनाशक कहा है। भारतवर्ष में ही प्रवाहित

होनेवाली गंगा एकमात्र ऐसी नदी है, जिसमें स्नान करने की बात ही क्या, इसके दर्शन मात्र से ही मनुष्य को मोक्ष मिल जाता है–

गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः।

गीता गंगा च गायत्री गोविन्देति हृदि स्थिते।

चतुर्गकारसंयुक्ते पुनर्जन्म न विद्यते।। तथा

गंगा गंगेति यो ब्रूयात्....आदि ।

वेदों में हमारे मन्त्र–द्रष्टा ऋषियों ने जल से प्रार्थना की है कि आप हमारे शरीर को सदा पवित्र बनाए रखें–

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु।[2]

वायु ही हमारा प्राण–तत्त्व ही है। इसके बिना हम एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते। वैदिक साहित्य के मंत्र–द्रष्टा ऋषियों ने इसे भी देवता के रूप में स्वीकृति दी है। वायु समस्त देवताओं की आत्मा है, इसकी उत्पत्ति प्रजापति के प्राण से हुई है–

प्राणाद्वायुरजायत।[3]

सर्वेषामुहैष देवानामात्मा यद्वायुः।[4]

आदिकाव्य के सहनायक के रूप में प्रतिष्ठित भगवान् श्रीराम के अनन्य भक्त सेवक हनुमान् वायुदेव के ही पुत्र थे, जिनकी यशोगाथा अवर्णनीय है।

पंचमहाभूतों में पावक–तत्त्व का भी एक विशेष महत्त्व है। इसके अंतर्गत अग्नि तथा सूर्य आदि तेज आते हैं। 'श्रीमद्भागवद्गीता' में भगवान श्रीकृष्ण ने सभी प्राणियों में अग्नि रूप में स्वयं की उपस्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है–

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।

प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।[5]

कलियुग में अन्न को प्राण कहा गया है– अन्नं ह प्राणः, पुनश्च इस अन्न की उत्पत्ति से लेकर पाचन–क्रिया तक सम्पन्न होने –संबंधी सभी कर्म अग्नि के द्वारा ही संभव होते हैं।

धरती यदि हमारी माता है तो आकाश को पिता का स्थान प्राप्त है–

मधु द्यौस्तु नः पिता।[6]

'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं आकाश में शब्द हूँ–

शब्द खे।[7]

आकाश सूर्य, चन्द्रमा, बादल, ग्रह–नक्षत्रादि के निवास स्थल है। शून्याकार होने पर भी इसकी असीमता जगत् मान्य है। आदिकवि ने इसे अनुपमेय और अतुलनीय कहा है। आदिकाव्य के अनुसार यह देवताओं और देवत्व–गुण–संपन्न ऋषि महर्षियों का भी आश्रय स्थान रहा है।

भारतीय संस्कृति को अरण्य संस्कृति से भी आख्यायित किया गया है, क्योंकि इसका विकास ऋषि महर्षियों के तपश्चरण और वैदिक मन्त्रागम के साथ हुआ है। भारतीय ऋषि–मनीषियों के पास विपुल और पारदर्शी ज्ञान का अक्षय भंडार था। उन्होंने उस ज्ञान के सहारे अपने परमपिता की कल्पना ही नहीं बल्कि उनसे साक्षात्कार कर एक अदृश्य शक्ति के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित किया, अपनी महिमामयी माता को पहचाना और क्रमशः उन्हें ब्रह्म और प्रकृति की संज्ञा दी।

माता जैसे महनीय पद से अलंकृत प्रकृति पंच तत्वों से निर्मित है। परब्रह्म परमात्मा की शक्ति भी इसी प्रकृति की माया और प्रभाव से उत्पन्न और क्रियाशील होती है। रूप, शब्द, स्पर्श, रसस्वाद और गन्ध इनके पृथक्–पृथक् गुण हैं।[8] भूमि, जल, वायु, मानव तथा मानवेतर प्राणिगण, वनस्पति और आकाशीय पिण्ड इस महत्तम प्रकृति के पारिवारिक सदस्य हैं। ये सदस्यगण जब आपस में मिलकर एक लघुतम परिवार का निर्माण करते हैं तो वह पर्यावरण का परिक्षेत्र बनता है।

पर्यावरण को परिभाषित करने का प्रयास सदियों से होता आ रहा है। लेकिन इसकी व्यापकता, बनावट, आवश्यकता और महत्ता को ध्यान में परखने पर कोई भी परिभाषा सार्थक नहीं बैठ पाई है। परिणामतः यह आज भी अपरिभाषित ही लग रहा है। कोश–ग्रंथों में स्वतंत्र रूप से इसका अर्थ उपलब्ध नहीं है।

आज के वैज्ञानिक युग में पर्यावरण एक नवीन पारिभाषिक शब्द के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। हमारी प्राचीन अवधारणाएँ जिस संहिता–विज्ञान पर प्रतिष्ठित थी, जिन मौलिक विचारों और भविष्य की संकल्पनाओं पर हमारी अरण्य–संस्कृति विकसित हुई थी, आज हम उन्हीं को छोड़ रहे हैं, वैदिक साहित्य के मन्त्र–द्रष्टा ऋषि–महर्षियों की संतान उनके पद–चिन्हों पर नहीं चल रहे हैं। परिणामतः ऋषियों ने प्रकृति के जिन भौतिक पक्षों की मंत्रात्मक संस्तुति की थी, पुराण और उपनिषद् जिन पंचमहाभूतों के उपादानों से प्रकृति को समुद्घाटित किया था, उसके आपस का संतुलन निरंतर बिगड़ता जा रहा है।

सम्प्रति मानव–जाति के समक्ष पर्यावरण–परिरक्षण एक गंभीर समस्या के रूप में खड़ा है। व्यक्ति, परिवार और समाज–सहित विश्व–ग्राम में पर्यावरण की चर्चा जितनी अधिक तेजी से हो रही है उतनी ही तीव्र गति से यह निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि हो रही है। बिगड़ते हुए प्रकृति संतुलन से मनुष्य की जीवन–शैली इस तरह प्रभावित हो रही है कि वह स्वयं अपनी दुर्दशा का समाधान ढूढ़ने में असमर्थ हो रहा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आज पूरे विश्व में पर्यावरण का स्वरूप बिगड़ता हुआ नजर आ रहा है। बढ़ती हुई आबादी, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, भूगर्भीय जल का दोहन, कल–कारखानों में गंदे जल से बढ़ता प्रदूषण, कभी अल्पवृष्टि तो कभी अनावृष्टि, कभी हड्डियों को कँपकपाने वाली भयानक सर्दी तो कभी भीषण गर्मी–इससे मानव–जीवन को खतरा उत्पन्न हो गया है।

जंगल के कटने और कार्बन डाइ ऑक्साइड के बढ़ने से सर्वाधिक प्रभाव वर्षा और जल पर पड़ता है। नदियाँ मृतप्राय हो रही हैं, जलीय जीव नष्ट हो रहे हैं, सर्वत्र जल के लिए त्राहिमाम् मच रहा है। देश के अंदर राज्यों में जल के बँटवारे का विवाद है तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी नदी–जल के लेन–देन के लिए दो देशों के बीच समझौते हो रहे हैं। कहीं–कहीं अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आती है, फसल बर्बाद हो जाती है। इतना ही नहीं बाढ़ के कारण करोड़ों की आबादी नष्ट हो जाती है।

पर्यावरणीय मौसम–चक्र में बदलाव के कारण भूपटल की स्थलाकृतियाँ नंगी हो रही हैं, मैदानी इलाके सूखा, बंजर और मरूवत् हो रहे हैं। जंगल वृक्ष विहीन होकर खेतों के रूप में परिवर्तित हो रहे हैं। जीव–जंतुओं की सैकड़ों प्रजापतियाँ विलुप्त हो रही हैं। मानव जीवन कैंसर, एड्स, डेंगू और ग्लूकोमा आदि नई–नई बीमारियों की गिरफ्त में फँसता जा रहा है।

पर्यावरण–प्रदूषित होने से पृथ्वी के जीवों पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। बदलते हुए मौसम के मिजाज के कारण सौर–मंडल का यह अनोखा ग्रह अपनी मातृत्व शक्ति को भी भूलने को विवश है। मातृभूमि का मनु–संतान एक ओर जहाँ अन्य ग्रहों पर जीवन की तलाश में लगा है वहीं दूसरी ओर स्वस्थ और सुखमय जीवन के लिए एक से एक नया आविष्कार कर रहा है।

पेट्रोलियम पदार्थो के जलने, कल–कारखानों से बहिर्गत धुएँ तथा पेड़ –पौधों के कटने से वातावरण में कार्बनडायऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। अनुमानतः लगभग 600 करोड़ टन कार्बनडाइऑक्साईड प्रतिवर्ष सिर्फ कोयले, डीजल और पेट्रोल के जलने से तथा दो अरब टन ऊष्ण कटिबंधीय जंगलों की कटाई के कारण वायुमंडल में प्रवेश करती है। परिणामतः धरती और आकाश दिनोदिन गरम होते जा रहे हैं, हम भीषण गर्मी से आहत और व्याकुल हैं। अमरनाथ जैसे बर्फीले प्रदेश में भी हमें कृत्रिम हिमलिंग का निर्माण करना पड़ रहा है। अनुमानतः यदि धरती के तापमान मेकं 3.6 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो जाए तो अंटार्कटिका और आर्कटिक ध्रुवों की बर्फ पिघल जाएगी। समुद्र का जल 100 सेमी. ऊपर उठ जाएगा और संपूर्ण पृथ्वी जलमग्न हो जाएगी।

जल ही जीवन है। यह कोई वाग्व्यवहार नहीं है अपितु शाश्वत सत्य है। जल, ज अर्थात् जन्म लेना और ल अर्थात् लय होना। इस प्रकार, जिससे जीवों की उत्पत्ति है, जिस पर जीवन आश्रित है, और जिसके बिना जीवों का विनाश संभव है या जिसमें सृष्टि लय हो जाए, वही जल है। संप्रति जल के सभी उपलब्ध स्रोतों में समुद्र का जल तो पेय है ही नहीं। वर्षा की मात्रा प्रतिदिन घटती

जा रही है। भू–जल का स्तर प्रतिदिन नीचे गिरता जा रहा है। नदियाँ प्रदूषित हो रही है। ग्लेशियर के पिघलने से कहीं–कहीं बाढ़ की विभीषिका भी उत्पन्न हो जाती है। वर्षा नहीं होने या झरने आदि के स्रोत समापत होने के कारण पर्वतीय प्रदेशों के वन भी सूख रहे हैं। आज भारत सहित संपूर्ण विश्व भीषण जल संकट से गुजर रहा है। यदि हम अपने देश की बात करें तो सिर्फ बड़े मरूस्थल वाले राज्य राजस्थान या उससे सटा हुआ प्रदेश गुजरात ही नहीं, सर्वाधिक वर्षावाला प्रदेश चेरापूंजी में भी पेय जल की कमी होती जा रही है। देश के अंदर जहाँ जो जल के स्रोत उपलब्ध हैं वहाँ भी इसका प्रबंधन ठीक नहीं है। देश की कई नदियाँ इस स्तर तक प्रदूषित हो गई हैं कि उनका पानी पीने योग्य की बात ही क्या, स्नान और कपड़े धोने के साथ मवेशियों को भी पिलाने लायक नहीं है। यदि हम अपने राज्य की बात करें तो यह कबीर के दोहे **पानी बीच मीन प्यासी** से कम नहीं है। जिस प्रदेश का अधिकांश उत्तरी भाग बाढ़ की चपेट में रहता है वहाँ भी पेय जल की समस्या है। गंगा जैसी नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं। दिल्लीवाले तो उलटी गंगा बहाने की सोच रहे हैं। यमुना जैसी भारतीय आस्था की प्रतीक नदी को इतने शर्मनाक तरीके से प्रदूषित कर दिया है कि उसके पास से गुजरने पर आँखों के चश्मे और नाक को रूमाल की आवश्यकता पड़ने लगती है। और फिर ये लोग पेय जल के लिए बगल के प्रान्त उत्तर–प्रदेश से गंगा का पानी मँगा रहे हैं।

बढ़ते तापमान और परिवर्तनशील जलवायु की स्थिति से ऐसा लक्षित होता है कि शायद एक समय ऐसा न आ जाए कि हमारी पृथ्वी अम्लीय वर्षा और सूर्य की पराबैंगनी किरणों से झुलसती दिखाई पड़ने लगे। पृथ्वी पर जलवायु समुद्र के आविर्भाव से परमात्मा को भी दूसरी सृष्टि करने के लिए सोचना पड़े।

'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' की एक विज्ञप्ति के अनुसार विकास के क्रम में मानवीय गति–विधियों के परिणाम–स्वरूप प्रतिवर्ष 5.7 अरब टन कार्बनडायऑक्साईड गैस उत्सर्जित होकर वायुमंडल को विषाक्त बना रही है। इसके अतिरिक्त क्लोरो–फ्लोरो–कार्बन (सी एफ सी) मीथेन तथा नाइट्रस ऑक्साइड आदि गैसें भी इसके साथ मिलकर पर्यावरण को लगातार प्रदूषित कर रही हैं और सामान्य तापमान में वृद्धि कर रही हैं। ग्रीन हाउस गैसों का मुख्य घटक कार्बनडाइऑक्साइड गैस हैं, जो सामान्य तापमान में 5.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी अकेले कर देती है। नाभिकीय विखंडल से भी काफी मात्रा में तापीय ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे आकाश भी गरम होता जा रहा है। इसके कारण आकाश का नीलापन धूमिल हो रहा है। ताप–वृद्धि के चलते वर्ष 1980 से 1990 का दशक 20वीं सदी का सर्वाधिक गरम दशक रहा है।

धरती के ऊपर ओजोन गैस की एक अदृश्य परत बिछी हुई है, जो सूर्य की पराबैगनी किरणों को पृथ्वी पर पहुँचने से रोकती है। वातावरण में व्याप्त क्लोरो–फ्लोरो–कार्बन जैसे पदार्थ

ओजोन की इस परत को नुकसान पहुँचाते हैं। ओजोन के निरंतर क्षरण से कैंसर और आँख की बीमारियाँ लगातार बढ़ रही हैं।

'आई. पी. सी. सी.' संस्था के एक अध्ययन के आधार पर यह बात सामने आई कि पिछली सदी में ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव के फलस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग से धरती के तापमान में 0. 50^0सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है। इसके कारण समुद्र–जल का स्तर 10 सेमी. तक बढ़ गया। इसी संस्था के एक अन्य प्रतिवेदन में यह कहा गया है कि यदि ग्लोबल वार्मिंग की दर इसी तरह बढ़ती रही तो वर्ष 2030 तक विश्व के सभी समुद्रों का जल स्तर 20 सेमी. तक बढ़ जायेगा। इससे लगभग 300 प्रशांत महासागरीय द्वीप पूरी तरह जलमग्न हो जायेंगे और हिन्द महासागर तथा कैरीबियन सागर के भी अनेक द्वीप बुरी तरह तबाह हो जायेंगे। तटवर्ती उपजाऊ भूमि पर खरे पानी के प्रवेश से भूमि की उर्वरा–शक्ति में ह्रास हो जाएगा।[10]

एक दैनिक समाचार–पत्र के माध्यम से बताया गया है कि ग्लोबल वार्मिंग और अलबिनों मौसम सिद्धान्त के कारण वर्ष 2007 दुनिया भर में अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा। ब्रिटेन के मौसम विभाग ने कहा कि कई कारणों के मिले–जुले नतीजों के आधार पर इस वर्ष औसत तापमान 1998 के रिकार्ड से अधिक रहने की संभावना है। इस लिहाज से 2007 अब तक छठा सबसे गर्म वर्ष रहा। मौसम विज्ञानी कैटी होपकिन्स ने कहा है कि यह नई सूचना एक और चेतावनी है कि दुनिया भर में जलवायु तेजी से परिवर्तित हो रही है। इसके परिणाम मानवता के लिए विनाशकारी होंगे। संयुक्त राष्ट्र की मौसम एजेंसी में दर्ज पिछले 150 वर्षों के तापमान के रिकार्ड का अध्ययन करने पर पता चला है कि विश्व में अब तक के सबसे गर्म दस वर्ष 1994 के बाद ही रहे हैं। पूर्वी एंजिलिया विश्वविद्यालय के सहयोग से ब्रिटिश मौसम विभाग प्रति वर्ष जनवरी में मौसम की वैश्विक भविष्यवाणी जारी करता है। मौसम–विभाग ने कहा है कि इस वर्ष औसत तापमान 1961–1990 के बीच के दीर्घकालिक औसत 14. 0^0 सेल्सियस से 0.54^0 अधिक रहने की संभावना है जबकि अब तक के सबसे गर्म वर्ष 1998 में औसत तापमान 14.0^0 सेल्सियस से 0.52^0 सेल्सियस अधिक था। ज्यादातर वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि इस सदी में तापमान में दो से छः डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होगी तथा इसका कारण ऊर्जा एवं यातायात में पेट्रोलियम पदार्थो के इस्तेमाल से होनेवाला कार्बन उत्सर्जन होगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि तापमान बढ़ने से ध्रुवीय हिम–खण्ड पिघलेंगे, समुद्र का तल ऊपर उठेगा तथा जलवायु में परिवर्तन से बाढ़, सूखा और विनाशकारी तूफान उठेंगे, जिनमें करोड़ों जानें जाने का खतरा रहेगा।[11]

विश्व की जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत लोग भारत–भूमि पर निवास करते हैं। देश के लगभग 29446 लाख हेक्टेयर भूमि पर जंगल है, जो विश्व के कुल वन–क्षेत्र का मात्र 2 प्रतिशत

और देश के कुल भूक्षेत्र का लगभग 19 प्रतिशत है। वैज्ञानिक चिंतन के अनुसार, प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए किसी भी क्षेत्र के कम से कम 33 प्रतिशत भू–भाग पर वन होना चाहिए।

मानव–समाज के लोगों ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकृति के उपादानों का अधिकाधिक दोहन किया है। फलस्वरूप–पर्यावरण प्रदूषण की गति निरंतर बढ़ती जा रही है। आबोहवा प्रतिदिन बदलती जा रही है। धरती पर संकट के बादल घिर रहे हैं। इसकी सुरक्षा के सारे ईश्वरीय प्रबंध कम पड़ते जा रही है। इसके लिए हमें व्यक्तिशः सचेष्ट रहना पड़ेगा। हमें अपने विकास के ऐसे मार्गो को ढूढना होगा, जिससे पर्यावरण को न्यूनतम खतरा हो।

हमारी मान्यताओं से पर्यावरण ईश्वरीय उपादान है। इसकी सुरक्षा कोई नई वैज्ञानिक संकल्पना या हमारी व्यक्तिगत मजबूरी नहीं है बल्कि सृष्टि के आरंभिक काल से ही मानव–समाज इस पर ध्यान देता रहा है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता और सभ्यता का विकास यहाँ की नदी–घाटियों में ही हुआ है। वेदों में पर्यावरण विषयक ऋचाएँ समुपलब्ध हैं। आदिकवि वाल्मीकि के समय में भी पर्यावरण और उसकी सुरक्षा का महत्व दिया जाता था, जिसके अनके संकेत उनके समुपलब्ध आदिकाव्य 'रामायण' में मिलते हैं।

आधुनिक काल में पर्यावरण–प्रदूषण और परिरक्षण संपूर्ण विश्व के समक्ष यक्ष–प्रश्न के रूप में समुस्थित है। यदि वैदिक काल के सद्व्यवहारों और आदिकविकालीन आचरणों के आधार पर इसका व्यवस्थीकरण किया जाए तो निश्चय ही उपर्युक्त समस्याओं के समाधान संभव हो सकेंगे।

श्रीमद्वाल्मीकीय 'रामायण' भारतीय सांस्कृतिक काव्यधारा का महत्वपूर्ण ही नहीं आदिग्रंथ है। इसका अध्ययन विविध दृष्टियों से बहुशः किए गए हैं किन्तु पर्यावरण की दृष्टि सेअब तक इसका समीक्षापरक मूल्यांकन नहीं किया गया है। विषय की उपादेयता को ध्यान में रखकरइस पर किया जानेवाला यह शोध–कार्य निश्चय ही संहिता–विज्ञान की प्राचीन संकल्पनाओं, पौराणिक आचरणों, आदिकाव्य में वर्णित सद्व्यवहारों और आधुनिक वैज्ञानिक अवधारणाओं के लोक–जीवन के बीच सेतु–सूत्र का कार्य करेगा, यह चिंतन, प्रयत्न और ऐसी आशा है।

संदर्भ सूचीः

1. अथर्ववेद – 12/01/12
2. अथर्ववेद – 12/01/30
3. ऋग्वेद – 10/90/13
4. शतपथ ब्राह्मण – 9/1/2/38
5. श्रीमद्भगवद्गीता – 15/14
6. ऋग्वेद – 1/90/7
7. ऋग्वेद –7/8
8. पृथ्वी सगन्ध सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः। नभः सशब्दं महता सदैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।। वामनपुराण – 14/26
9. हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर, पटना, दिनांक–5 जून 2006
10. हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर, पटना, दिनांक–5 जून 2006
11. हिन्दी दैनिक, राजस्थान पत्रिका, नई दिल्ली, दिनांक–5 जून 2007